ट्राफिक के अनुकूल ढल रहे हैं पक्षी

करंट बायोलॉजी में प्रकाशित एक अध्ययन के मुताबिक सड़क किनारे रहने वाले पक्षियों में कुछ अनुकूलन हो रहे हैं जो उन्हें ट्राफिक से निपटने में मददगार साबित हो रहे हैं।

उपरोक्त अध्ययन मुंडेरों पर रहने वाले पक्षी अबाबील (*पेट्रोचेलिडॉन पायरोनोटा*) पर किया गया है। ये पक्षी अपने मिट्टी के शंकु आकार के घोंसले सड़क किनारे इमारतों की मुंडेरों पर बनाते हैं। वैसे ये आजकल अंडरब्रिज़ों और फ्लाईओव्हर के नीचे भी रहने लगे हैं। ये 12,000 तक की बस्तियों के रूप में रहते हैं। मुंडेरों पर घोंसला बनाने और रहने वाले अबाबील की एक विशेषता यह है कि ये जाड़े के दिनों में दक्षिण अमरीका चले जाते हैं और प्रजनन उत्तरी अमरीका में करते हैं।

ओक्लाहामा विश्वविद्यालय में जीव वैज्ञानिक चार्ल्स ब्राउन और नेब्रास्का लिंकन विश्वविद्यालय की मैरी बॉमबर्गर ब्राउन ने अपने अध्ययन के दौरान पाया कि कारों से टकराकर मरने वाले अबाबील की संख्या में पिछले तीन दशकों में कमी आई है। ब्राउन और बॉमबर्गर ब्राउन का ख्याल है कि यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि अबाबील में सड़क-अनुकूलन हो रहा है।

मज़ेदार बात यह है कि इस अध्ययन के लिए आंकड़े जुटाना आसान नहीं रहा। ब्राउन एक टेक्सीडर्मिस्ट भी हैं। टेक्सीडर्मिस्ट मृत जानवरों की खाल में मसाला भरकर उन्हें संरक्षित रखने का काम करते हैं। वे पिछले तीस सालों से मृत अबाबील के ऐसे शव जमा करते रहे हैं। इन तीस सालों में उन्होंने 104 ऐसे अबाबील के शव एकत्रित किए जो वाहनों से टकराकर मरे थे जबकि 134 ऐसे शव संग्रहित किए गए जो अपने घोंसलों में अन्य कारणों से मारे गए थे। ये सारे शव वयस्क पक्षियों के थे। उन्होंने देखा कि इन तीस सालों में वाहनों से टकराकर मरने वाले अबाबील की संख्या में कमी आई है जबकि अबाबील की कुल आबादी बढ़ी है।

अब उन्होंने वाहनों से टकराकर मरने वाले और सामान्य रूप से मरने वाले अबाबीलों के पंखों की लंबाई की तुलना की। यह देखा गया कि इन वर्षों में वाहन से टकराकर मरने वाले अबाबील के पंखों की लंबाई तो बढ़ी है मगर उन अबाबील के पंख छोटे हुए हैं जो घोसलों में मरे थे।

शोधकर्ताओं का मत है कि छोटे पंखों से पक्षियों को अपनी उड़ान का बेहतर नियंत्रण करने में मदद मिलती है। खास तौर से अचानक मुड़ना ज़्यादा फुर्ती से हो सकता है, जो तेज़ गति के वाहनों से बचने के लिए ज़रूरी है।

डेनमार्क के एक अन्य टेक्सीडर्मिस्ट ने भी देखा है कि डेनमार्क में भी वाहनों से टकराकर मरने वाले पक्षियों की संख्या में कमी आई है। अब वे भी अपने पास संग्रहित पक्षी शवों के पंखों का तुलनात्मक अध्ययन करने की योजना बना रहे हैं।

वैसे उक्त शोधकर्ताओं ने स्पष्ट किया है कि वे यह नहीं कह रहे हैं कि अबाबील में अनुकूलन का यही एकमात्र आधार है। उनका कहना है कि पंखों की साइज़ में परिवर्तन से पता चलता है कि अनुकूलन हो रहा है और काफी तेज़ी से हो रहा है। ***(स्रोत फीचर्स)***